ओ३म्

कल्याण का कल्याण

अर्थात्

वैराग्यविहारभजनावली

प्रथम भाग

जिस को

मुन्शी कल्याण भजनोपदेशक ने अपने निज परिश्रम से वैदिकधर्मसंबंधी सभाओं में सर्वसाधारणजनों के लाभार्थ गाने व सुनने योग्य निर्माण किया जिस में उत्तम २ नवीन भजन व कवित्त व छन्द व रसिया आदि बना कर प्रकाशित किया और उचित २ स्थानों में प्राचीन कवियों के श्लोक भी दिये हैं ॥

ओ३म्

❀ भूमिका ❀

प्यारे सभ्य पुरुषो ! मैं कोई कवि नहीं हूं न मुझ में कविताई की योग्यता है न यथा छन्द का ज्ञान है। केवल कुछ शब्दों का किंचित् बोध रखता हुआ अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार वरतारी धुनि में अपने बनाये भजन सभा समाजों में गाता रहा और कई स्थानों में कई एक सज्जन पुरुषों ने मुझ से कहा कि आप अपने भजनों को मुद्रित कराइये जिस से सर्वसाधारण को लाभ हो इस लिये मैंने विचार किया कि आज तक बहुत किताबें भजनों की मुद्रित हुईं जिन में भली भांति खंडन मंडन दर्शाया गया है मैंने यह उचित नहीं समझा। कि अब बड़े २ बुद्धिमान् महाशय

पूर्णरूप से खंडन मंडन कर चुके हैं तौ मैं उसी में टांग अड़ाऊं । पस इस लिये धर्म विषय को लेता हुआ वैराग्यविहार भजनावली नामक पुस्तक आप की सेवा में उपस्थित करता हूं और आशा करता हूं कि मुझ जैसे अल्पबुद्धि की टूटी फूटी तुकबन्दी को आप आदर देंगे तो ईश्वर की कृपा से इस का दूसरा भाग भी आप की सेवा में शीघ्र अर्पण करूंगा अब इस के छपवाने के विषय में महाशय छविलाल गुप्त का धन्यवाद करता हूं कि जिन्हों ने कुछ धन की सहायता देकर मेरे परिश्रम को सफल किया ॥

आप का सेवक–

मुंशी कल्याण भजनोपदेशक

टीकरी कलां जिला अलीगढ़ पो० अगसौली

हाल निवास टोढ़ी का नगला

पोस्ट मोहनपुर जिला एटा

वैराग्य विहार भजनावली

प्रथम भाग

यतोयतःसमीहसे ततो नो अभयं कुरु ।

शन्नोकुरु प्रजाभ्योऽभयं नःपशुभ्यः ॥

(अर्थ)–हे परमेश्वर ! आप जिस २ देश से जगत् के रचने और पालनार्थ चेष्टा करते हैं कृपया उस २ देश से भय रहित कीजिये । उन २ देशों से हमें कदापि भय प्राप्त न हो वैसे ही आप की दिशाओं में जो पशु और प्रजा हैं उन से भी हमें भय से बचाइये । हम से उन को सुख हो वैसे ही उन से हमें सुख मिले । आप की सृष्टि में जो समस्त प्राणी हैं ॥ उन

के अर्थ जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पदार्थ हैं वे आप की कृपा से हमें भी सर्वदा प्राप्त हों। आप की दया दृष्टि सर्वदा हमें सुख दें ॥

कवित्त ॥

जितने जीव जगत बीच देह धारण किये हुए सुक्ख की अभिलाष में शरीर को बिताते हैं। कर्म अनुसार पुनि २ जन्म लेलेकर आवागमन बीच वे गुमार चक्कर खाते हैं ॥ कहता कल्याण जिस ने सत्य मार्ग लिया जान। ब्रह्म को पहिचान सदा आनन्द को पाते हैं ॥ दुःखों से रहित जगदीश्वर के सहित हो कर मुक्ति की नियादलों संसार में न आते हैं ॥ १ ॥

भजन ॥

कहां सुख पाइयेरे है दुःख रूप सकल संसार।
बिना दुक्ख को कोई पदार्थ दुनियां में न दिखाय ॥

फिर संसार समुद्र में मूरख नाहक गोता खाय। कष्ट क्यों उठाइयैरे प्यारे डूब २ मजधार ॥ १ ॥

कवित्त ॥

धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर जी ने भीष्म से पूछा है कि सुक्ख के साधन को बताइये। उत्तर दिया कि प्रथम क्षमा रूपी शस्त्र लेकर क्रोध रूपी वृक्ष विलकुल जड़ से उड़ाइये ॥ यम और नियम के अनुष्ठान से नि-र्भय हो। इच्छा द्वेष काम इन को धैर्य्य से नशाइये ॥ चाहैं कल्याण तौ कल्याण करि विचार अव लोभ और मोह को सन्तोष से मिटाइये ॥ २ ॥ कड़ी ॥ करले मन निर्मोह मोह तजि तोड़ मोह का फन्द। तृष्णा मोह के मद में फस के खोवे आयु मति मन्द ॥ बुद्धि क्यों वहायैरे इस संसार समुद्र मझार ॥ २ ॥

ग्रन्थ कर्त्ता की प्रार्थना श्रोतागणों से

कवित्त ॥

मोह की महिमा महा प्रबल है दुनियां में आज इस के विषय सभा बीच छन्द गाता हूं। इस लिये पूर्व महापुरुषों के जो आचरण उदाहरण रूप उन का चरित्र समझाता हूं थोड़े से समय को सब श्रोतागण कृपा करो। आप के चित्त को इस गाथा में लगाता हूं॥ कहता कल्याण मित्र सुनो धरि ध्यान तुमें एक निर्मोही का दृष्टान्त अब सुनाता हूं॥ ३

कवित्त ॥

निर्मोही राजा का एक पुत्र निज नग्र तजि तपस्वी के दर्शन करने को वन में आया है। पूंछा कि कौन और कहां से आये कहो निर्मोही पिता उसने

अपना बताया है ॥ निर्मोही कुटुम्ब परिवार निर्मोही सब अपना भी अमोही नाम साधू को सुनाया है। कहता कल्याण राज कुमर को कुटी पर छोड़ कर मैं ले कमंडल जांच करने ऋषी धाया है ॥ ४ ॥ कही ॥ राज भुवन जाय तपस्वी द्वारपाल से बोला। वन में विनाश डाला सिंह ने राज कुमर का चोला ॥ देर नहीं लगाइयेरे करदो खबर राज दरबार ॥ कहां ५ ॥

कवित ॥

तपस्वी के वचन सुनि द्वारपाल कहने लगा सुनिये महाराज मेरा छोटासा वयान है। ऐसा समाचार कोई आश्चर्य जनक नहीं जिस के सुनाने को किया खुद ही पयान है। जिस का प्रकाश उस का हो अवश्य नाश। देखो पढ़ कर इतिहास ज़रा होकर सावधान है ॥ कहता कल्याण पैदा हुए को ना पैद जान इस की साक्षी को आज पृथिमी विद्यमान है ॥ ६ ॥

कड़ी ॥ बड़े २ विद्वान् और धनवान जगत् में आये। धर्म धुरन्धर जोगी जती हुए सभी काल ने खाये ॥ अन्त पछिताइयेरे मित्र कवि कल्याण कहता पुकार कड़ां ॥ ३ ॥

भजन २ । कवित ।

नौकर निर्मोही की बात को विचार दिल में चल कर वहां से पास राजा के आया है। देख कर तपस्वी को आसन दिया छोड़ नृप महात्मा के चरनों में शीस को नवाया है। आदर सत्कार सहित आसन पर बिटार लिया कर दिया कृतार्थ मुझे दर्शन दिखाया है। कहता कल्याण आप कीजिये बयान किस निमित्ति को लेकर कष्ट इतना उठाया है ॥

भजन ॥

मैं आया खबर करने को तेरा सुत सिंह ने खाया

है ॥ कड़ी ॥ वह दर्शन करन को धाया । तब कुटी के नजदीक आया । और मैं भी न देखन पाया । दुष्ट ने आकर दवाया है ॥ तेरा १ ॥

॥ छन्द ॥

जस दर्श को नृप कुंवर तेरा कुटी पर वन में गया
सुनि शब्द सुत का शीघ्र ही वहां सिंह ऊपर आगया ।
करने न पाया बात कुछ एक साथ पुत्र दवा लिया ।
वर्णन करत हृदय दहत बेटा बधिक ने खालिया ॥१॥

कड़ी ॥ अब सुनि कर ऋषी की बानी । हुई दिल में न कुछ भी गिलानी ॥ यह बिलकुल तुम्हारी नादानी । कष्ट क्यों इतना उठाया है ॥ तेरा ॥२॥

श्लोक ॥ अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्य संचयः ।
ऐश्वर्यं प्रिय संवासो मुह्येत्तत्र न पंडिता ॥ १ ॥

धन यौवन और प्रभुताई । वृथा इन में प्रीति

बड़ाई । तन मन अपना दिया लगाई । तौ वास्तव दुख कमाया है ॥ तेरा ॥ ३ ॥

श्लोक—यथाकाष्ठं च काष्ठंच समेयातां महार्णवे ।
समेत्यच व्यपेयातां तद्वद्भूतसमागमः ॥

कवित ॥

सुक्ख के पदार्थ जितने दृश्यमान दुनियां में सब ही हैं अनित्य इन को खूब अजमा लिया । जिस प्रकार काष्ठ के लट्ठे दो समुद्र बीच बहते थे जुदे फिर मिलाप परस्पर किया । मिल करके दोनों पुनः पृथक बहने लगे । ईश्वर का नियम यही परिचय खूब पालिया पुत्र का शोक नहीं शोक है इस बात पर कि तुम से तपस्वी को दुष्ट मोह ने दबा लिया ॥ १ ॥ कड़ी ॥ है मोह की महिमा न्यारी । जिसने जीती दुनियां सारी कवि कल्याण कहता पुकारी । एक दिन सब को सताया है ॥ ४ ॥

भजन ३ ॥ कवित ॥

नृपति के बचन सुन कर तपस्वी चला है जब निर्मोही राजा की रानी के पास आया है। जो था समाचार प्रथम भूपति से जाकर कहा वही राज पत्नी को कह कर सुनाया है ॥ ए हो महारानी तेरा राज कुमर बन में गया। घेर कर अगारी सुत सिंह ने खाया है। प्रेम विवस उठति हूक होत हैं हृदय के टूंक हाय तेरे पुत्र का निशान तक मिटाया है ॥ ८ ॥

श्लोक क्रोडी करोति प्रथमं यथा जात मनित्यता ।
घात्रीवजननीयश्चात्तथाथोकस्यकःक्रमः ॥ २ ॥
यथाहिपथिकःकश्चिच्छाया माश्रत्य तिष्ठति ।
विश्रम्य च पुनर्गच्छेत्तद्वतसमागमः ॥ ३ ॥

सुन कर ऋषी के बैन लगी कहने रानी। जब होता जनम विख्यात है मृत्यु भी लगाती घात है।

संयोग वियोग का साथ है॥ इसमें नकुछ हानी। सुन १॥ ज्यों अभित मुसाफिर आया। किसी वृक्ष तले सुख पाया। करि विश्राम फिर चढिधाया इस तरह जिन्दगानी॥ सुन २॥

कवित ॥

अनित्य संसार सकल धुंधि का पसारा इस में कर्म अनुसार प्राणी सुख दुख पाता है। या विधि से पथिक कोई रैनि समय ठहर जात होत ही प्रभात अपने मार्ग में जाता है। याही प्रकार यहां बहुत आये बहुत गये। इस में करै शोक सोई मूरख कहाता है॥ कहता कल्याण करके यहां से पयान पुनः पुत्र की पत्नी से अपी जाकर बतलाता है॥ ९॥

॥ छन्द ॥

सुनिले तू पुत्रवधू वचन यह शोक का समाचार है।

सौभाग्य पुत्री आज से सब ही तो धरी उतार है ॥
तेरा पती दर्शन करन को गया बन में धाय के।
अभिलाष पूरी ना भई सुत सिंह ने लिया खाय के ॥

कड़ी ॥ पति मरा तो क्या बड़ी बात है। निज शरीर अपने न साथ है ॥ स्वारथ के पती पुत्र नात हैं। अन्त अकेला प्रानी ॥ सुन ॥ ३ ॥ यह काल के वश में जहांन है। चाहैं निर्धन हो चाहैं धनवान है । यों कहता पुकार कल्याण है निर्मो अटलवानी ॥ सुन ४ ॥

भजन ४ । कवित्त ॥

जाइ के तपस्वी राज पुत्र से कहने लगा करने को जोव आज तेरे निज घर गया ॥ होरहा कुलाहल सारे नग्र के निवासियों में सुनि के समाचार मुझे दूना दुख बढ़ गया ॥ प्रजा के लोग सब हा हा कार करत मिले । मेरा था खयाल वह बिलकुल बिसर गया ॥ जितना परिवार अपना छोड़ कर आया तू माता पिता सहित तेरा सब कुटुम्ब मर गया ॥ १० ॥

कवित ॥

जगत बीच जन्म जिन का अवश्य हो अखीर तिनका । आवागमन बीच इस प्रकार चक्कर खाता है। कर्म्म अनुसार संयोग और वियोग होत कर्म अनुसार उत्तम मध्यम तन पाता है । कर्म अनुसार प्राणी रह कर शरीर माहिं कर्म अनुसार तन से पृथक हो जाता है । कहता कल्याण तनक देखौ धरि ध्यान सत्य कर्म अनुसार जग में देखत का नाता है ॥ ११ ॥

भजन ॥

स्वारथ का सकल संसार यहां पर कोई न अपना है । सुत मात पिता परिवार है । सब मतलब से करते प्यार हैं ॥ यह कर्म अनुसार व्यवहार है एक दिन सभी को मरना है ॥ यहां ॥ १ ॥

छन्द ॥

एक दिन अवश्य मरना है सब को क्या पिता क्या मात है। मर गये तो शोक क्या सीधी सनातन बात है ॥ मरने का किंचित् शोक नहीं अर्थात एक मन में रही। निर्मोही होने की तुमैं पूरी परीक्षा ना भई ॥२॥ कड़ी ॥ ऋषी चला ले साथ कुमर को । जब आया निर्मोही नगर को ॥ जब गया पुत्र निज घर को हुआ सब कुटुम से मिलना ॥ यहां ॥ २ ॥ पितु माता कहैं सुत हमारे। इकलौता नैन के तारे। हा ! तुम बिनु प्राण पियारे। हुआ हमैं सब जग सपना है॥ यहां३ ॥ कहै कल्याण सुत के मिलन में ॥ हुई शंका तपस्वी के मन में। निर्मोही हौंन की इन में ये बिलकुल झूंठी कल्पना है ॥ यहां ॥ ४॥

भजन ५ । कवित ॥

पुत्र पर प्यार करत शंका जब ऋषी को हुई राजा

पहिचान गया तपस्वी के मन को । एही महाराज सब वृथा साबित हुई होगी जिसकी बात सुनी मेरी निर्मोही पन की ॥ इसलिये श्रीमान जग में जनक का बर्ताव करै । ऊपरी मात्र राखै संसारिक सुखनको ॥ मानुष का जन्म पाकर वृथा मोह में लगा कर आपके संसार में सरबस अपना खो गया ॥ मेरी २ कहता २ तन से प्राण पृथक् हुए उलटे मारग मैं चलकर दुख का बीज बोगया ॥ रखना था चित्त नित्य ब्रह्म के विचार ही मैं । पड़ कर अविद्या रूपी रात्री मैं सो गया । चाहैं कल्याण तौ लगाइ जनक का सा ध्यान राज काज करता हुआ ब्रह्मज्ञानी हो गया ॥ १ ॥

भजन ॥

कठिन संसार मैंरै करनी करना जनक नृप की सी । ब्रह्मवेत्ता जनक नृप सब जग में शोर यह छाया। जांच करन को एक ऋषीवर जनकपुरी में आया ॥ कठिन ॥ १ ॥ द्वार पालने रनवास में और कहा नृपति

से जाइ ॥ आप से मिलने को एक तपस्वी खड़ा है आस लगाइ ॥ कठिन० २ ॥ नाम ऋषी का सुनत नृपति ने कहा वचन समझाइ । कौन तपस्वी जल्दी जाकर लावो उन्हें लिवाइ ॥ कठिन० ३ ॥ सुन कर वचन जनक का नौकर लाया शीघ्र बुलाइ । रानिन के करसे राजा रहा तेल का मर्दन कराइ ॥ कठिन० ४॥ कहै कल्याण देखि यह कौतुक ऋषी ने दिल में विचारी । ब्रह्मवेत्ता सुना था इस को यह पूरा व्यभिचारी ॥ कठिन० ५ ॥

भजन सं० ६

कवित

पूरा व्यभिचारी बात दिल विचारी ऋषी हटा है पिछारी क़दम आगे बढ़ायर नहीं । उठ के नृप धाया शीश चरनों में नवाया अहो भाग्य दर्श पाया

सुक्ख दिल में समाया नहीं ॥ बोले वक्रवानी सुनों भूप अभिमानी सुना तुझ को ब्रह्मज्ञानी यहां ढंग कुछ पाया नहीं । कहता कल्याण कवि देखि २ तेरी छवि बात चीत करना मेरे दिल में समाया नहीं ॥१४॥

॥ दोहा ॥

जानि लई नृप जनक ने ऋषि के मन की बात ।
नारि समूह निहारि मोद रणवासन से जात ॥

भजन ॥

दई करमैं कठिन किरपान चतुर चाकरको बुलायाहै ।
एक जल का कटोरा भर कर ।
दिया ऋषी के कर पर धर कर ॥
और नौकर को हुक्म सुना कर ।
नगिन खंजर करवाया है ॥ चतुर० १ ॥

कवित ॥

जल का कटोरा धरा ऋषी के कर पर कहा जा कर उद्यानों की बहार देखि आइये । नौकर से कहा कि एक बिन्दु गिरत पानी का होकर निशंक शीश तपसी का उड़ाइये । है वापी और तड़ाग कूप वाटिका अनूप बने । दर्शन करा के शीघ्र वापिस ले आइये ॥ कहता कल्याण रहना दिल में सावधान खूब हाथ हिल गया तौशीश धड़ पै नहीं पाइये ॥१५॥

कड़ी—चले चाकर के संग ऋषी आये ।
उद्यानों के दर्शन पाये ॥
कुआ तालाव मन्दिर दिखाये ।
हुक्म राजा का बजाया है ॥ चतुर २ ॥
जब उपवन देखि कर आये ।
तब नृपति ने वचन सुनाये ॥
कहौ कैसे बग़ीचा बनाये ।
सो चित्र कुछ चित्त में भी आया है ॥ चतुर३ ।

कवित ॥

रहा नृप चित्त मेरा पानी के कटोरे पर क़दम को बढ़ा कर जभी धरता था अगार मैं। हाथ के हिलने की शंका रही हृदय पर पूरा था ख़याल मेरा नंगी तलवार मैं॥ कहता कल्याण कर जोरि भूप कहने लगा। इस प्रकार मेरा भी निवास है संसार में। ऊपरी मन से नीतियुक्त राजकाज करूं पूरा प्रेम जानों सदा ब्रह्म के विचार मैं॥ १६॥

कड़ी—अब समझौ गृहस्थी भाई।
अनुकरण करौ चित लाई॥
तभी पाओगे जग से रिहाई।
छन्द कवि कल्याण गाया है॥
चतुर चाकर को बुलाया है॥ ४॥

किसी कवि का वचन है कि—श्लोक॥

वनेपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणां,
गृहेपि पंचेन्द्रिय निग्रहस्तपः ।
अकुत्सिते कर्मणियः प्रवर्त्तते,
निवृत्तरागस्य गृहंतपोवनम् ॥ ४ ॥

दोहा ॥

जो नर या संसार में राखैं यही विचार ।
तिनका जीवन सफलहै सोई दुखसे पार ॥

भजन संख्या ७

कवित

खाना और पीना सब जीवों को ज़रूरी मित्र सोने और जागने में सब ही समान हैं । सुक्ख के कारण से सब ही परिश्रम करैं विषय भोग करने का

सब ही को ज्ञान है । इन्द्री अपना २ धर्म स्वयं सब को ग्रहण करैं ॥ चाहें हो मनुष्य और चाहें हैवान हैं। ताज्जुब है एक किस रीति से विचारैं कि इन्सान में इन्सानियत का कौन सा निशान है ॥ १७ ॥

भजन ॥

क्या फर्क पशू इन्सान में आओ मिल
कर विचारैं भाई ।
खाना पीना खुशी और ग़म हैं ।
इन का जाने दोनों मरम हैं ।
सोने जागने में नहीं कम हैं ॥
देखो लाकर ध्यान में ।
बस बिल्कुल रखैं एकताई ॥ आओ १ ॥
विषय भोग करना दोनों जानैं ।
अपने बिराने को भी पहिंचानैं ।

सुख और दुख को सब ही मानैं ॥
दोनों के दर्म्यान मैं कहो कितनी मित्र कम-
ताई ॥ आओ २॥

सुख की कोशिश सब करते हैं ।
दुख में पड़ने से डरते हैं ॥
आख़िर को एक दिन मरते हैं ।
जन्मे जो आकर जहान मैं ॥
नहीं इस में लुटाई बड़ाई ॥ आओ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

गाने और रोने हंसने से इन्सान मानो धरो फौनूग्राफ़ की तर्फ़ ज़रा ध्यान है । खाने और ज्यादा चलने से मनुष्य गिनों तो सब से बड़ा लो इञ्जन को मान है ॥ मनुष्य का चिन्ह एक ऋषियों ने वताया हमैं विद्या को पढ़ कर लेइ धर्म को पहिंचान है । कहता कल्याण अगर होकर इन्सान नहीं धर्म को पहिंचानता तो विनु पूंछ का हैवान है ॥

विन विद्या के पशु कहाता ।
सींग पूंछ कर्म अनुसार पाता ॥
यही बतावें ऋषि मुनि ज्ञाता ।
सोई गुनियों के गान में ।
कहै कल्याण छन्द बनाई ॥ आओ ४ ॥

रसिया नं० १

ऐसो नरतन नाहक क्यों खोवै ।
धर्म हेत मानुष तन दीयो ॥
आइ जगत मैं अधरम कीयौ ।
नित विषयन के मग जोवै ॥ ऐसो० १ ॥
अब हूं करि कछु नेक कमाई ।
सो तेरे होइ संग सहाई ॥
नहिं अन्त में मूड़ पकड़ रोवै ॥ ऐसो० २ ॥
खेती करिलै ओ३म् नाम की ।
रस्ता मिलै तोकूं सुख के धाम की ॥
वृथा बीज दुख के बोवै ॥ ऐसो० ३ ॥
होइ मास की काया तेरी ।

एक दिन होयगी खाक की ढेरी ॥
ताहि देखि क्या खुश होवै ॥ ऐसो० ४ ॥
चाहैं कल्याण जो दुख्ते छूटो ।
आवागमन को चाहैं बंधन टूटौ ॥
तो दिल के दाग क्यों ना धोवै ॥ ऐसो०५ ॥

रसिया नं० २

पछिताइगो एक दिन यार समझ ले निज मन में ।
सारी उमरि ममता में गुजारी ॥
माया मोह में फंसो अनारी ।
परस्त्री लखि भयो व्यभिचारी ।
खोहि जन्म को सार ॥ समझ० १ ॥
द्रव्य देखि है रह्यो घमंडी ।
मस्त रहै और पियै बरंडी ।
लगै प्राण ते प्यारी रंडी ।
घर तिरिया लाचार ॥ समझ० २ ॥
रहै लीन नित विषय भोग में ।

कभी चित्त नहीं देत योग में ।
अन्त समय जब घिरै रोग में ।
पटकै जम की मार ॥ समझ० ३ ॥
चौरासी में चक्कर खायौ ।
तब तैने यह नरतन पायौ ।
हाय शोक ! ग़फलत में गमायौ ।
बुद्धि पै पड़े अंगार ॥ समझ० ४ ॥
कहै कल्याण विचार के चालौ ।
हित करि पियौ भक्ति कौ प्यालौ ।
जगदीश्वर की आज्ञा पालौ ।
जो है सर्वाधार ॥ समझ० ५ ॥

रसिया नं० ३

तर्ज-बदरा फारिडारे राति कटी ले कजरा ।
सुख के समीप बसिकैं प्यारे
तैने क्यों पाप कमायौ है ।
चौरासी में घूमि २ कैं नरतन पायौ है ।

लोभ मोहके फांसिफंदा में वृथा गमायौ है ॥

तैने क्यों पाप० ॥ १ ॥

वेद ईश्वरी ज्ञान में मूरख चित न लगायो है ।

परधन और पर नारि निरख कैं अति ललचायौ है ॥

तैने क्यों पाप० २ ॥

जादिन जन्म भयौ जग में काहि तब कहालायौ है ।

दोनों हाथ खाली जाइ कायें पै मान बढ़ायौ है ।

तैने क्यों पाप० ॥ ३ ॥

करि जगदीश्वर दया दुक्ख ने बहुत सतायौ है ।

जन कल्याण धरि ध्यान प्रभू तेरी शरण में आयौ है ।

तैने क्यों पाप० ॥ ४ ॥

ओ३म् शम्

सर्व सज्जनों का सेवक—

मुं० कल्याण भजनोपदेशक

(टीकरी कलां)

डाकखाना अगसौली

जि० अलीगढ

(वर्तमान पता)

मुकाम टोढ़ी का नगला

डाकखाना मोहनपुर

जिला एटा

पुस्तक मिलने का पता—

दूकान महाशय हेतराम रामलाल

बजाज मोहनपुर डाक० खास

जिला एटा

पं० गौरीशंकर शर्मा के प्रबन्ध से
पालीवाल प्रिंटिंग प्रेस छिबरामऊ
जि० फर्रुखाबाद में छपी ॥